19 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

कर्म रूपी दर्पण द्वारा
आत्मा का दर्शन करने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा भृकुटि के मध्य विराजमान हूं

➳ _ ➳ मैं निराकार वतन से आई हूं

→ इस साकार वतन में आई हूं

■ कर्म करने के लिए

→ इस कर्म क्षेत्र में आई हूं

■ कर्म करने के लिए

→ पांच तत्वों का बना शरीर मिला है मुझे

→ यह कर्म इंद्रियां मिली है मुझे

■ कर्म करने के लिए

→ मैं कर्म करते कर्म द्वारा

■ संबंध संपर्क में आ रही हूं

→ हर भोगना कर्म करते हुए भोग रही हूं

→ मैं हर हिसाब किताब

■ चुकतू कर रही हूं

→ मैं प्रारब्ध बना रही हूं

→ मेरे कर्म मुझ आत्मा का दर्पण है

■ जिसमें मैं आत्मा

■ स्वयं का दर्शन कर रही हूं

➢➢ मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा

➳ _ ➳ मेरी शक्ति की स्थिति की

→ पहचान है मेरे कर्म

➳ _ ➳ आज कर्म लीला द्वारा

→ अपनी शक्तियों की चेकिंग करती हूं

➳ _ ➳ मेरे समक्ष कुछ व्यक्ति आते हैं कुछ परिस्थितियां आती हैं

→ मैं समय अनुसार शक्तियों का आह्वान कर रही हूं

→ चेकिंग में मुझे कुछ कमजोरी दिख रही है

■ मैं अति सूक्ष्मता से,

■ अति गहराई से,

■ अति सजगता से

■ अति सत्यता से

■ चेकिंग कर रही हूं

■ कमजोरी के बीज तक पहुंच रही हूं

➳ _ ➳ मैं सत्य आत्मा

→ सत्य बाप की संतान हूं

→ कमजोरियों को पहचानने की

■ शक्ति है मुझमें

→ कमजोरियों को मानने की

■ शक्ति है मुझमें

→ हर कमजोरी को भस्म करने की

- शक्ति है मुझमें

→ मैं अपनी हर कमजोरी की शाखा को

→ हर कमजोरी की जड़ को

→ हर कमजोरी के बीज को

- ज्वाला स्वरूप बन
- ज्वालामुखी योग से
- भस्म कर रही हूँ

➳ _ ➳ सिर्फ नॉलेज फुल नहीं

→ मैं पावरफुल आत्मा हूँ

➢➢ मैं इस कर्म क्षेत्र पर होशियार योद्धा हूँ

➳ _ ➳ मेरी सूक्ष्म शक्तियां शक्तिशाली है

→ पर प्रत्यक्षता का आधार हैं मेरे कर्म

➳ _ ➳ मेरा हर कर्म

→ श्रेष्ठ है महान है

➳ _ ➳ हर शक्ति को

- चरितार्थ कर रही हूं मैं

→ मेरा शक्ति स्वरूप, चैतन्य स्वरूप

- पूजनीय बन गया है

→ मेरे जड़ चित्रों का

- चैतन्य स्वरूप हूं मैं

➳ _ ➳ मैं शक्ति सेनानी हूं

➳ _ ➳ मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूं

➳ _ ➳ मैं श्रेष्ठ कर्म योगी हूँ